RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-1
Issue-09
September-2016

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

ग्रामीण महिलाओं का नारी संबोध

डॉ. राजकुमार सिंह बोलिया

व्याख्याता, समाजशास्त्र, मा.ला.व. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

प्रस्तावना –

यह सच ही है कि नारी अपनी पहचान को बनाने के लिये नहीं वरन् पर्दे के पीछे से ही अपना सर्वस्व लगाकर उसे अपनों के लिये ही समर्पण भाव से , त्याग से, प्रेम से, सहानुभूतिपूर्वक अपने सारे सम्बन्धों को निभाने में पूरी जिन्दगी लगा देती है। नारी अपने स्वयं को नजर अंदाज करके, अपनों को नजर आने जैसा बनाने का प्रयत्न संपूर्ण जीवन को, त्याग कर करती है। आज समाज में नारी की जो भी स्थिति है वह उसके त्याग, विश्वास, मातृत्व प्रेम, वात्सल्य, सहानुभूति, सामंजस्य और सरलता के कारण ही इस निम्न स्थिति में आ पहुंची है, और यह सच ही है कि नारी अपनी पहचान उजागर न होने के लिये स्वयं ही जिम्मेदार ळें

नारी संबंधी विचारों में तीन संबोध प्रमुख है नारीत्व, नारीयत, नारीवाद

नारीत्व : पुरूष व स्त्री के बीच शारीरिक व जैविक अन्तर को स्पष्ट करने वाला शब्द,

नारीयता: समाज व संस्कृति के द्वारा नारी का विशिष्ट निर्माण जिसके माध्यम से प्रस्थिति, भूमिका, सोच व मूल्य गढ़े जाते हैं।

नारीवाद : ऐसा विचार जो पुरूष व स्त्री के मध्य असमानता को अस्वीकार कर नारी के सबलीकरण की प्रक्रिया को बौद्विक व क्रियात्मक रूप से प्रकट करता है)

इन्दौर जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूर खुड़ेल तहसील से दो कि.मी. की दूरी पर ग्राम सिंधी बरोदा स्थित है। यहां का मुख्य व्यवसाय कृषि, पशुपालन एवं कृषि मजदूरी है। शिक्षा अभिमानों के कार्यक्रम एवं प्रचार प्रसार से शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है किन्तु ग्रामीण महिलाएँ अधिकांशतः अशिक्षित ही हैं।

वर्तमान वैश्विक समाज में आधी आबादी अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के साथ अपने अधिकारों के प्रति सजग एवं सचेत भी हुयी है। वैचारिक स्तर पर वह अपने स्वयं को पुरूषों से किसी भी प्रकार कमत्तर नहीं आंकती है। विश्व के अधिकांश देशों में संवैधानिक विषमताएँ लगभग समाप्त हो चुकी हैं। कानून महिलाओं एवं पुरूषों दोनों ही को बराबरी का दर्जा देता है ऐसे में आधुनिक युग में आर्थिक–व्यावसायिक क्षेत्र में भी महिलाओं का सहयोग, योगदान एवं जिम्मेदारियाँ बढ़ी है। इससे महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में बड़े पैमाने पर सुधार एवं बदलाव भी आया है। नारीवाद विचारों के समर्थन में महिलाएँ पहल करने लगी हैं। अपने नारीवाद विचारों के प्रति सजग सचेत एवं क्रियाशील हुयी है।

ग्राम सिंधी बरोदा में निवास करने वाली 20 से 40 आयु वर्ग की सभी विवाहित महिलाएँ– 80

तथ्य संकलन में साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है एवं उत्तरदाता महिलाओं में विवाहित महिलाओं का चयन किया गया है एवं उन्हें आयु सीमा में परिसीमित किया गया है ।

उद्देश्य :

नारी के प्रति संबोध उसके परिवेश की देन है। बालिकाओं का जन्म जिन पारिवारिक एवं सामाजिक संस्कृति में होता है उसके विचार एवं दृष्टिकोण का निर्माण भी उसी प्रकार से होता है। आज भी हम कह सकते है कि ग्रामीण समाज में महिलाओं की प्रस्थिति बहुत सम्मानजनक नहीं है, यधपि आजकल नारी संबोध ''नारीयता'' से उठकर नारीवाद की और प्रवृत हुआ है, इस आधी आबादी के अनेकों सक्रिय आंदोलन भी दृष्टव्य हैं अतः ग्रामीण महिलाओं में नारी के प्रति वैचारिक दृष्टिकोण क्या है यही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है और संक्षेप में भी इस अध्ययन से जाना जा सकेगा कि –

- ग्रामीण महिलाओं में नारी के प्रति स्व अवधारण क्या है?
- परिवार और समाज में अपने स्वयं के प्रति क्या स्थिति है ?
- महिलाओं का प्रतिक्रियात्मक व्यवहार कैसा है?

ग्रामीण महिलाओं का नारी संबोध

क्र.सं.	अवधारणा	संख्या	प्रतिशत
1	नारीवाद	32	40 प्रतिशत
2	नारीयता	48	60 प्रतिशत
3	नारीत्व	–	–

ग्रामीण अशिक्षित महिलाएं आज भी ''नारीयता'' के विचारों की पोषक हैं । ये महिलाएं पारिवारिक सामाजिक, संस्कृति द्वारा जिस विशिष्ट ''नारी'' का निर्माण किया गया है, उन आदर्शों, विचारों, दृष्टिकोणों, प्रस्थिति एवं भूमिका के अनुसार स्व

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अवधारणा निर्मित करती हैं। वे शाब्दिक एवं अशाब्दिक तौर पर किए गए नकारात्मक व्यवहार को स्वीकार करती हैं चाहे वे मानसिक उत्पीड़न ही क्यों न देते हों। ''नारीयता'' की पोषक ये महिलाएं स्वीकारती हैं, मानती हैं कि चूंकि समाज में नारी बनकर जन्म लिया है अतः नारी के अनुरूप (विशिष्ट सांस्कृतिक निर्माण) ही व्यवहार करना होगा ।

परिवार एवं समाज में स्वयं की स्थिति

क्र.सं.	महिलाओं की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	पुरूषों से उच्च	4	5 प्रतिशत
2	पुरूषों से निम्न	56	70 प्रतिशत
3	समान स्थिति	20	25 प्रतिशत

महिलाओं का प्रतिक्रियात्मक व्यवहार

क्र.सं.	महिलाओं की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	स्वीकरोक्ति	44	55 प्रतिशत
2	अस्वीकरोक्ति	20	25 प्रतिशत
3	सक्रिय विरोध	16	20 प्रतिशत

निष्कर्ष :

अध्ययन करने पर पाया गया कि इन ग्रामीण महिलाओं का नारी के प्रति संबोध ''नारीयता'' है। पुरूषों से निम्न प्रस्थिति होने पर भी वे इसे नियती मानती है। ये महिलाएं पुरूष प्रभुत्व के साथ–साथ उपेक्षापूर्ण, असम्मान पूर्ण जीवन जीने के लिये विवश भी है और इसके प्रति उनकी स्वीकरोक्ति भी है।

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि ग्रामीण महिलाओं में नारीवाद से स्थान पर नारीयता संबोध पूर्णतः विद्यमान है। सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण एवं संस्कृति ने जिस नारी का निर्माण किया है उनकी स्व अवधारणा, उन अपेक्षाओं के अनुरूप है इन ग्रामीण महिलाओं में यह भ्रांति ही उनका विश्वास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. गुप्ता रामप्रताप (2009) ''गरिमा की हकदार महिला घरेलु कामगार''–2009
2. रावत एच.के. (1998) ''समाजशास्त्र विश्व कोष'', जयपुर, रावत
3. शर्मा के.एल. (2011) ''सामाजिक स्तरीकरण'' जयपुर, रावत
4. दुबे एस.पी. (1990) ''इंडियन सोसायटी'', नई दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट
5. टुमिन एम. (1969) ''सोशल स्ट्रेटीफिकेशन'', नई दिल्ली, प्रेन्टिस हॉल

© RRIJM 2015, All Rights Reserved